Indian J. Soc. & Pol. 05(01):147-148:2018 **ISSN: 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

आर्थिक विकास के निर्धारक तत्व

सर्वानन्द सिंह[1a]
[a]प्रवक्ता, अर्थशास्त्र विभाग, श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय भुड़कुड़ा गाजीपुर उ0प्र0 भारत

ABSTRACT

किसी भी देश के आर्थिक विकास में कुछ ऐसे तत्व उपस्थित होते है जिन पर उस देश का आर्थिक विकास निर्भर करता है। इसमें दो प्रकार के तत्व शामिल होते है प्रथम प्रधान चालक तत्व एवं अनुपूरक तत्व तथा द्वितीय आर्थिक एवं गैर आर्थिक तत्व। प्रधान चालक तत्व का कार्य उस देश के आर्थिक विकास के कार्य को प्रारम्भ करना होता है। इन तत्वों के माध्यम से जब विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है, तो कुछ तत्व इन्हें तीव्रता प्रदान करते है । इस प्रकार प्रधान चालक तत्व विकास की आधार स्तम्भ है , जबकि अनुपूरक तत्व आर्थिक विकास को गति प्रदान करने का कार्य करते है।

KEY WORDS: आर्थिक विकास, मानव संसाधन, कौशल विकास

प्राकृतिक साधन,मानव साधन , कौशल निर्माण तथा सामाजिक , सांस्कृतिक व संस्थागत तत्वो को प्रधान चालक तत्वों में सम्मिलित किया जाता है , जबकि जनसंख्या वृद्धि ,प्राविधिक विकास की दर, पूंजी निर्माण की दर आदि अनुपूरक तत्व होते है । मुख्यतः आर्थिक विकास को निर्धारित करने वाले घटको को दो भागों में विभजित किया जाता है ।(अ) आर्थिक तत्व (ब) गैर–आर्थिक तत्व

आर्थिक तत्व

प्राकृतिक साधन – प्राकृतिक साधनो से तात्पर्य उन सभी भौतिक एवं नैसर्गिक संसाधनो से है , जो प्रकृति द्वारा एक देश को उपहार स्वरुप प्रदान होता है , भूमि , खनिज पदार्थ , जल सम्पदा , वन सम्पत्ति , वर्षा एवं जलवायु , भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक बंदरगाह आदि किसी देश में उपलब्ध होने वाले प्राकृतिक साधन होते है । ये प्राकृतिक साधन किसी देश के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते है । अन्य बातो के समान रहने पर जिस देश के पास प्राकृतिक साधन जितने अधिक होंगे उस देश का आर्थिक विकास उतनी ही तीव्र गति से होगा।

प्राकृतिक साधनो के बारे में दो बातो को दृष्टिगत रखना अति आवश्यक होता है । प्रथम प्राकृतिक साधन हमेशा के लिए सीमित व निश्चित होते है। मानवीय साधनो से उन्हे खोजा तो जा सकता है , परन्तु उनका नव निर्माण नही किया जा सकता । द्वितीय आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक साधनो की बहुलता ही पर्याप्त नही है बल्कि उनका उचित ढंग से विदोहन किया जाना आवश्यक है ।

मानवीय साधन – मानवीय साधन श्रम प्राचीन काल से ही उत्पादन का एक महत्वपूर्ण एवं सक्रिय साधन माना जाना है। मानवीय श्रम ही आकार वृद्धि दर संरचना व्यवसायिक वितरण व कार्य क्षमता आदि का उस देश के आर्थिक विकास पर अत्यन्त गहरा प्रभाव पड़ता है।

पूंजी निर्माण – पूंजी व पूंजी का संचय आर्थिक विकास की एक अनिवार्य आवश्यकता है। जब देश में पर्याप्त मात्रा में पूंजी व पूंजी निर्माण नही होगा तब तक आर्थिक विकास का लक्ष्य पूरा नही हो सकता । विकसित देश जहॉ पूंजी निर्माण की दर उची होती है की तुलना में अल्पविकसित एवं विकासशील देश में पॅूजी निर्माण की धीमी दर के कारण उनका आर्थिक विकास आज भी अवरुद्ध अवस्था में पड़ा हुआ है ।

तकनीकी प्रगति एवं नव प्रवर्तन – तकनीकी प्रगति एवं नव प्रवर्तनो को अपनाया जाना आर्थिक विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक माना जाता है । तकनीकी ज्ञान उत्पादन की विधियों में भैतिक परिवर्तन लाकर आर्थिक विकास के कार्य को गति प्रदान करता है । विकसित देशो की विकास वृद्धि की दर बुनियादी रुप से उनके द्वारा की गयी तकनीकी प्रगति व नव प्रवर्तन की खेज पर आधारित रहती है इसके विपरीत अल्व विकसित देशो में तकनीकी ज्ञान के अभाव में उत्पादन की पुरानी व परम्परागत विधियों का प्रयोग किया जाता है जिसके परिणाम स्वरुप उनका आर्थिक विकास आज की पिछड़ी हुई अवस्था में है ।

उद्यमशीलता – आर्थिक विकास की तकनीकी प्रगति व नव प्रवर्तनो पर निर्भर करती है । नव प्रवतनो के लिए उद्यमशीलता के लिए जोखिम उठानी पड़ती है और जोखिम सफलता का दूसरा नाम है विकसित देशो की तुलना मे पिछड़े हुए देशो में उद्यमशीलता का अभाव व जोखिम उठाने की क्षमता न होने के कारण इन देशो का आर्थिक विकास सम्भव नही हो सका । अल्प विकसित देशो में नव प्रवर्तनो की भूमिका सरकार द्वारा अजित की जाती है । इसका एक कारण निजी उद्यमशीलता की कमी और इसका विकास कार्यो पर उत्पादन नई तकनीकी के अर्न्तगत विशाल धनराशी का विनियोग करना पड़ता है जो कि व्यक्तिगत प्रयत्नो से सम्भव न हो पाता ।

विदेशी पूजी – अल्पविकसित एवं विकासशील देशो में आर्थिक विकास का एक अन्य निर्धारक तत्व विदेशी पूजी है । इन देशो में प्रति व्यक्ति आप कम होने के कारण घरेलू बचत की दर काफी कम होती है । लोगो का जीवन स्तर नीचा हो जाता है । उनके द्वारा बचत करना सम्भव नही हो पाता । फलतः घरेलू बचत की इस कमी को विदेशी पूजी के आयात द्वारा पूरा किया जाता है । इसका सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि यह अपने साथ तकनिकी ज्ञान व पूजीगत उपकरणो को भी लाती है । इस प्रकार विदेशी पूजी व विदेशी तकनीक के उपलब्ध हो जाने पर अलपविकसित

1: Corresponding Author

देशो में तकनीकी स्तर को उॅचा करके प्रति व्यक्ति उत्पादकता को बढाया जा सकता है ।

गैर आर्थिक तत्व –

सामाजिक तथा संस्थागत तत्व – किसी देश का आर्थिक विकास इस बात पर निर्भर करता है कि लोगो में नूतन मूल्यों व संस्थाओं को अपनाने की कितनी प्रबल इच्छा है। वास्तव में गैर आर्थिक तत्वों के रुप में यह सामाजिक, मनोविज्ञान व संस्थागत आर्थिक विकास की उत्प्रेरक शक्तियॉ है ।

अल्पविकसित देशो में जाति–प्रथा छुआ–छूत संयुक्त परिवार प्रणाली उत्तराधिकार के नियम, भूमि व सम्पत्ति के प्रति मोह अंध–विश्वास रुढिवादिता धार्मिक पाखण्ड परिवर्तन के प्रति विरक्ति और उसका विरोध सामाजिक अपत्यय तथा झूठी–शान–शौकत आदि जैसे तत्वों ने आर्थिक विकास के मार्ग में बाधाए उत्पन्न की है । इन देशो का आर्थिक विकास तब तक सम्भव नही हो सकता जब तक इन सामाजिक सांस्कृतिक व धार्मिक संस्थाओं का नये सिरे से नव निर्माण न कर दिया जाय।

स्थिर तथा कुशल प्रशासन – किसी देश का आर्थिक विकास कुछ सीमा तक उस देश में स्थिर व कुशल प्रशासन पर भी निर्भर करता है । यदि देश में शान्ति व सुरक्षा पायी जाती है तथा न्याय की उचित व्यवस्था है तो लोगो में काम करने तथा बचत करने की इच्छा पैदा होगी और फलस्वरुप आर्थिक विकास को बढावा मिलेगा । इसके विपरीत यदि देश में राजनैतिक अस्थिरता है तथा आन्तरिक क्षेत्र में अशान्ति का वातावरण व्याप्त है तो इससे विनियोग सम्बन्धी निर्णयो पर बुरा प्रभाव पड़ेगा । पूजी विनियोग कम होगा , जोखिम उठाने के लिए साहसी तैयार नही होगें तथा विदेशी पूजी का देश मे कम होगा । परिणाम स्वरुप देश का आर्थिक विकास पिछड़ा जाएगा ।

अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियां – आर्थिक विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियां का अनुकुल होना आवश्यक है । विश्व मंच पर राजनैतिक शांति के अतिरिक्त विकसित देशो सदभावनाएं संयोग व वित्तिय सहायता का उपलब्ध होंना भी आवश्यक है। अल्पविकसित देशो में पूँजीगत सामान भारी मशीनें तथा तकनीकी ज्ञान का सर्वथा अभाव होता है । इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति विकसित राष्ट्रों द्वारा जब तक नही की जायेगी तब तक इन देशो का आर्थिक विकास अवरुद्ध बना रहेगा ।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है किसी भी देश का आर्थिक विकास अनेक तत्वों अथवा घटको पर निर्भर करता है वस्तुतः यह कहना कि कौन सातत्व अधिक महत्वपूर्ण है अत्यन्त कठिन होगा । आर्थिक विकास की प्रक्रिया में इन सभी निर्धारक तत्वों का अपना एक विशेष स्थान होता है इसलिए उनके सापेक्षिक योगदान तथा महत्व के बारे में कुछ भी कहना न तो सम्भव ही है और न तर्कपूर्ण अन्त में यह कहा जा सकता है कि किसी देश के आर्थिक विकास के लिए उपरोक्त तत्वों का होना अति आवश्यक है क्योकि इनके बिना आर्थिक विकास की कल्पना करना असम्भव है ।

सन्दर्भ

मायर एवं वाल्डविन(1966) *इकोनामिक्स ऑफ डवलपमेण्ट* नई दिल्ली, एशियन पब्लिकेशन हाउस

दत्त एवं अम्मान *आर्थिक विकास की दिशाए,* नई दिल्ली, दि मैकमिलन कम्पनी आफ इण्डियन लिमिटेड

सिंह एस0पी0 (1984) *आर्थिक विकास एवं नियोजन* नई दिल्ली, एस0 चन्द्र एण्ड कम्पनी

गवर्नमेण्ट ऑफ इण्डिया (1968) प्लानिंग कमीशन रिपोर्ट आन जनरल इशू रिलेटिग टु बैक वर्ड एरियाज उवलपमेण्ट नेशनल कमेटी आन दी डवलपमेण्ट आफ बैकवर्ड एरियाज न्यु दिल्ली